वर्ष 3 - अंक - 20 मई 2015

ISSN 2320-0359

युद्धरत आम आदमी

वंचितों का मासिक आर्थिक-सामाजिक दस्तावेज़ी साहित्य

1
3
9

सहयोग राशि 20 रुपये

इस अंक में

चिलकुरी देवपुत्र, रत्नकुमार सांभरिया, एलिस वॉकर, के सच्चिदानंदन, कौशल पंवार
ममांग देई, यदुमणि बेसरा, अलीक
प्रकाश विप्लव, शहंशाह आलम, संजीव खुदशाह
स्वतंत्र मिश्र, आलोका, रम्या बालन

अनूदित कविताएं

ममांग देई

अंग्रेजी से अनुवाद : रेखा सेठी

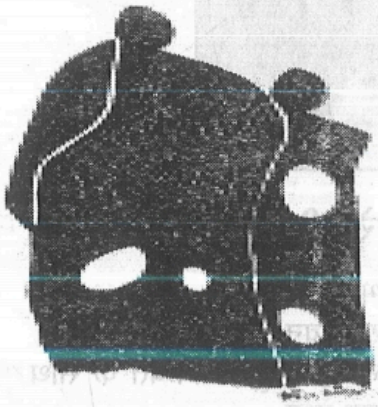

नदी

बहुत देर तक नदी किनारे मत रहो
भटका हुआ देवता है नदी
वह एक हाथी है, एक शेर है
कभी–कभी उसे घोड़ा भी कहते हैं वे
एक गर्म मौसम में हमने सोचा कि
पीली धूप में लोटता मोर है वह
जो हमारी आंखों को भर देता सुनहलेपन से

लिली के ताल में तिर आई एक औरत को देखा
कोहरे के पहाड़ में
बादल में लिपटी
पत्तों के घूंघर और छिटके पराग के साथ बहती

मैंने सोचा : नदी एक औरत है
श्वेत तीव्र बहाव में अटका संगीत का एक सुर
गुप्त किसी मानचित्र को समेटे कागज़ का एक पन्ना
वहीं है आकाश की सीमा–रेखा
अंधेरे और शिखर के बीच
प्यास की जन्मभूमि पर

बहुत देर तक नदी किनारे मत रहो
डूबती आत्मा है यह
सशक्त सशस्त्र देवता
बनाता–मिटाता ऐसे मौसम
कभी नदी बहती, कभी ठहरी हुई
कभी सागर, कभी महासागर
हमारे गर्म मौसम की नदी
हमारी जिन्दगियों का नमक समेटती

इन गर्मियों

इन गर्मियों, मैं गा सकती हूं
बंदी योद्धा के गीत
गाऊंगी पेड़ों की खुरदरी गुमनामी के लिए
और यहां इन टहनियों पर
मैं छोड़ सकती हूं अपने खाली जिरहबख्तर
जैसे भूले हुए शब्दों के खोखल
सब कुछ याद करते हुए जो कभी जानते थे हम

समय–क्या है?
वह, प्रतीक है उस आदमी का
जो बादलों और कोहरे से प्यार करते हुए
गीत बांटता फिरता है

समय–उससे क्या फर्क पड़ता है?
हमने फूल बनाए और धूप
और बारिश के हाथफूल
गीत बांटते हुए

अब मैं गा सकती हूं उजले चटकते शब्द
गीतों की याद में
माफ़ी मांगते हुए तितलियों से
और उस सारे सौन्दर्य से
जिन्हें हमने नष्ट किया
जीवन की तृष्णा में

इन गर्मियों
समय–तिरछे झुकता हमारी ज़मीन पर
समय ही बताएगा, क्या अर्थ है
दूर से चाहने का

संपर्क : गुटेह गमराह, सेक्टर–सी, ईटानगर – 791111
दूरभाष : 0360–2212694